मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 54 अंक 2 | प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
फरवरी 2018 | बहाई वर्ष : 174

विश्व न्याय मन्दिर

आज जबकि एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से, एक वर्ग को दूसरे वर्ग से, एक प्रजाति को दूसरी प्रजाति से, एक सम्प्रदाय को दूसरे सम्प्रदाय से पृथक करने वाली दरारों को उभारने वाली फूट बढ़ती जा रही है, तो 'योजना' को क्रियान्वित करने वालों को चाहिए कि वे अपने आध्यात्मिक जीवन और प्रशासनिक कार्यकलापों में इससे भी बढ़कर एकमयता झलकाएँ और अपने सामूहिक उद्यम में गहन प्रयास, आपसी सहयोग एवं सामंजस्यपूर्ण विकास का और अधिक उच्च स्तर प्रदर्शित करें। *–रिज़वान 2017*

लखनऊ में रूही पुस्तक–10 भाग–1 के अध्ययन का आयोजन

उत्तरप्रदेश में लखनऊ के बहाई भवन में जनवरी माह के अंतिम सप्ताह में रूही पुस्तक–10 की पहली इकाई का अध्ययन किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 30 मित्रगणों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। पुस्तक की इस इकाई के अध्ययन ने प्रतिभागियों को सेवा के पथ पर चलने की प्रेरणा दी और मोनिका तथा रोड्रिगो के समर्पित जीवन को सराहा। अध्ययन के दौरान यह अनुभव किया गया कि अगर उचित मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिले तो पुस्तक के पात्र मोनिका, रोड्रिगो अच्छी संख्या में अपने समूह में रहते हैं और वे एक–दूसरे के कंधे–से–कंधा मिलाकर साथ–साथ चलने का उत्साह भी रखते हैं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि उन्हें उचित समय पर प्रोत्साहन और दिशा प्रदान की जाये।

पुस्तक को पढ़ने के दौरान कुछ प्रतिभागियों ने अपने–अपने समुदाय में भी मोनिका और रोड्रिगो की पहचान की और प्रभुधर्म के प्रति उनके समर्पित जीवन की चर्चा की। समाज की सेवा और सच्ची मित्रता दो ऐसे विषय थे जिन पर काफी देर तक चर्चायें होती रहीं और अनेक प्रतिभागियों में इस बातचीत से उत्साह भर आया और सबके साथ उन्होंने सेवा का संकल्प लिया।



लखनऊ बहाई भवन में आयोजित रूही पुस्तक–10 भाग–1 के अध्ययन में भाग लेने वाले प्रतिभागी

अध्ययन में लखनऊ उप–क्षेत्र के तीन क्षेत्र इंटौजा, हरख और विसवाँ के 28 मित्रों के अलावा सहायक मण्डल सदस्य और एक क्षेत्रीय बहाई परिषद के सदस्य शामिल रहे। अध्ययन के अंत में सभी प्रतिभागियों द्वारा एक साल के लिए अपनी सेवा योजना बनायी गई और उसे उपस्थित मित्रों के साथ साझा भी किया गया।

इस अंक में

बिहारशरीफ में समीक्षा बैठक का आयोजन

बिहारशरीफ़ क्लस्टर की 25वीं समीक्षा बैठक 13 जनवरी, 2018 को तेतरावाँ समुदाय के सरस्वती विद्या मंदिर में सम्पन्न हुई, जिसमें हरगावाँ, तेतरावाँ, सिपाह, नवाज़ीबिगहा, चोरसुआ, बकरा, राजगीर, अमदाहा, दरियापुर, रहिंचा और सकरौल कुल 11 समुदाय से 105 मित्रों ने भाग लिया।

क्लस्टर विकास समिति, बिहारशरीफ़ के संचालन में बैठक की शुरूआत भक्तिमय वातावरण में सुमधुर प्रार्थनाओं के साथ हुई, तत्पश्चात् विकास समिति एवं संस्थान दल के मित्रों ने विगत चक्र की समीक्षा करते हुए वर्तमान में संचालित सभी मूलगतिविधियों व उससे संबंधित अपने अनुभवों एवं चुनौतियों को साझा किया, साथ ही इन गतिविधियों के समाज पर पड़ रहे सकारात्मक प्रभावों की भी चर्चा की, कि कैसे व्यक्ति, परिवार एवं समुदाय में नित नये रूपांतरण की झलकियाँ देखने को मिल रही हैं। ज्ञात हो कि सम्प्रति, बिहारशरीफ़ क्लस्टर के 27 समुदायों में 261 नियमित प्रार्थना सभाएँ तथा 15 प्रभातकालीन प्रार्थना सभाओं का आयोजन किया जा रहा है, जिनमें 2137 बहाई एवं जिज्ञासु मित्रगण भाग ले रहे हैं। इसी प्रकार, शैक्षणिक प्रक्रियान्तर्गत यहाँ 7 सहशिक्षकों की मदद से 6 समुदायों में 11 अध्ययनवृत कक्षा; 39 अनुप्रेरकों की मदद से 11 समुदाय में 45 किशोर समूह कक्षा एवं 58 शिक्षकों की मदद से 12 समुदाय में 53 बहाई बाल कक्षा का आयोजन किया जा रहा है, जिनमें प्रतिभागियों की संख्या क्रमशः 59, 528 एवं 617 है।

समीक्षा के क्रम में मित्रों ने अक्टूबर, 2017 में आयोजित युगावतार बहाउल्लाह के द्वि–शताब्दी जयंती समारोह से संदर्भित अपनी सीख एवं अनुभवों को भी साझा किया। विदित हो कि बिहारशरीफ़ क्लस्टर के कुल 34 समुदायों में जयंती समारोह मनाने हेतु 276 परिवारों के 3476 मित्रों के साथ अर्थपूर्ण वार्तालाप की गई थी, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ के 24 समुदायों में उक्त जयंती समारोह आयोजित किये गये, जिसमें अपेक्षा से अधिक अर्थात् 918 परिवार से कुल 6250 मित्रों ने भाग लिया।



तेतरावाँ समुदाय में आयोजित समीक्षा बैठक में भाग लेने वाले प्रतिभागी

बैठक में उपस्थित परिषद सचिव एवं सहायक मंडल सदस्य द्वारा समागत मित्रों को बताया कि यह समीक्षा बैठक संबद्ध क्लस्टर के साथ–साथ पूरे बिहार, भारतवर्ष तथा विश्व केन्द्र के लिए अति महत्वपूर्ण है, क्योंकि देश–दुनिया के तमाम लोग स्थानीय बहाई उपासना मन्दिर, बिहारशरीफ़ के निर्माण की अति व्यग्रता से प्रतीक्षा व इस हेतु दिन–रात प्रार्थनाएं कर रहे हैं; और इस समीक्षा बैठक में मंदिर निर्माण से संबंधित भौतिक एवं आध्यात्मिक दो प्रमुख आयामों पर वृहत्तर चर्चाएँ की जानी हैं साथ ही मशरिकुल–अज़कार के स्वरूप, डिजाइन आदि से संदर्भित विश्व न्याय मंदिर के परिपत्रों का अध्ययन किया जाना है; क्योंकि मंदिर–भवन निर्माण की परियोजनाएँ अब एक अगले पड़ाव पर पहुँच चुकी है। अतएव, संरचनात्मक ढ़ाँचा

शेष पृष्ठ 4 पर

>kj[k.M d nk DyLVjk dh igyh lek{kk cBd

झारखंड राज्य के 'पटमदा क्लस्टर' एव 'गमहरिया क्लस्टर' की पहली समीक्षा बैठक 7 जनवरी 2018 को संपन्न हुई। यह समीक्षा बैठक पटमदा क्लस्टर के बारूबेरा समुदाय में एवं गमहरिया क्लस्टर के धिराजगंज समुदाय में स्थानीय मित्रों द्वारा आयोजित की गयी थी। पटमदा क्लस्टर में लगभग कुल 80 स्थानीय मित्रों ने भाग लिया। इस अवसर पर सहायक मण्डल उसी प्रकार जिस समुदाय में समीक्षा बैठकें होती हैं, इसका यह अर्थ होता है कि वहाँ की बहाई गतिविधियों में प्रतिभागी नियमित रूप से भाग ले रहे हैं तथा अपने समुदाय के विकास के प्रति जागरूक हैं। उन्होंने यह भी बताया कि समीक्षा बैठकों को तिमाही चक्र भी कहा जाता है। समीक्षा बैठकें वह स्थान होती हैं जिसमें गत तीन महीनों की समीक्षा और आगामी



गमहरिया क्लस्टर में आयोजित बैठक के प्रतिभागी

सदस्य श्रीमती उमा दलाई साथ ही परिषद के सदस्य एवं राज्य स्तरीय संयोजक भी उपस्थित हुए। गमहरिया क्लस्टर में भी लगभग कुल 70 स्थानीय मित्रों ने भाग लिया। यहाँ भी सहायक मण्डल सदस्य श्रीमती सुमन सेन साथ ही परिषद के सचिव श्री संदीप कुमार तीन महीनों की योजना तैयार की जाती है। इसमें मित्र समुदाय में संचालित की जा रही गतिविधियों से परिचित होते हैं तथा खास कर चुनौतियों एवं सीखों से अवगत होते हैं। इस प्रकार की कई उपयोगिताओं को उन्होंने समुदाय के साथ बांटा। इसके बाद इन



पटमदा क्लस्टर में आयोजित बैठक के प्रतिभागी

शर्मा एवं राज्य स्तरीय संयोजक भी उपस्थित हुए। बैठक का आरम्भ प्रार्थनाओं एवं निगूढ़ वचन के अंशो के अध्ययन से हुआ। इसके बाद परिचय सत्र हुआ, जिसमें सभी मित्र एक दूसरे से परिचित हुए। इसके बाद सहायक मण्डल सदस्यों एवं परिषद सचिव द्वारा सभी को बधाई देते हुए समीक्षा बैठक की उपयोगिता एवं इसमें हम क्या करते हैं उससे अवगत कराया गया। उन्होंने कहा की समीक्षा बैठकें स्वस्थ शरीर में प्रवाहित होते रक्त की तरह हैं, जिससे हमें उसकी स्वस्थता का पता चलता है। ठीक क्लस्टरों में वर्तमान में संचालित की जा रही गतिविधियों से स्थानीय मित्रों को अवगत कराया गया।

इस तरह गतिविधियों की प्रस्तुति के बाद स्थानीय मित्रों द्वारा बहाई बाल कक्षा, किशोर समूह, अध्ययनवृत कक्षाओं की उपयोगिता के बारे में बताया गया। साथ ही, वर्तमान में संचालित की जा रही कक्षाओं का अनुभव और बच्चों, किशोरों द्वारा चित्रांकन, गीत–संगीत, नृत्य प्रस्तुत किया गया। इस तरह सांस्कृतिक प्रस्तुति के उपरान्त एक तीन माह की योजना बनाई गयी।

समाचारचित्र



महाराष्ट्र के कल्याण में एसटी बस डिपो पर 14 जनवरी 2018 को पुस्तकों और पोस्टरों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में लगभग 2000 लोगों को बहाउल्लाह का आरोग्यदायी संदेश प्रदान किया गया। प्रदर्शनी के दौरान एक व्यक्ति जो पारम्परिक पुजारी की वेशभूषा में थे उन्होंने प्रदर्शित संदेश पढ़ना आरम्भ किया और कुछ समय बाद स्वयंसेवकों से प्रभुधर्म के बारे में जाना जो उनके लिए हृदयस्पर्शी था। उन्होंने बताया कि उनका नाम वामन रामचन्द्र शास्त्री है, वे एक पूर्वसैनिक हैं तथा काठमांडु के पशुपतिनाथ मंदिर में प्रमुख पुजारी हैं। यह भी बताया कि विभिन्न क्षेत्रों में उन्होंने 2500 स्वर्णपदक और तीन राष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं। प्रभुधर्म में उन्होंने अपनी आस्था व्यक्त की।



ग्वालियर के रब्बानी स्कूल परिसर में 23 से 25 दिसम्बर, 2017 तक तीन दिवसीय शीतकालीन स्कूल आयोजित किया गया। इन तीन दिनों में किताब–ए–अक़दस का अध्ययन किया गया, जिसमें बनारस, मुरैना, इंदौर, जयपुर और ग्वालियर से लगभग 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कक्षा का संचालन इंदौर के प्रोफेसर एफ. यू. शाद द्वारा किया गया। किताब–ए–अक़दस के अध्ययन के साथ–साथ उपस्थित मित्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम, बॉन फायर और खेल आदि अनेक गतिविधियों में भी हिस्सा लिया।

''अय्याम–ए–हा''

बहाई कैलेण्डर के अनुसार वर्ष में 18वें तथा 19वें महीनों के बीच 4 और कभी–कभी 5 दिन ऐसे होते हैं जिन्हें ''अय्याम–ए–हा'' (लोंद के दिन) कहा जाता है। इन दिनों का अपना ही एक महत्व होता है, यह उपवास से पहले के दिन होते हैं जिन दिनों में बहाई अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों को प्रीतिभोज देते हैं या अपने में से गरीब लोगों को खाना खिलाते हैं। दान देने के उद्देश्य से भी ये दिवस बहुत ही उत्तम और पवित्र माने गये हैं। उन्नीसवें महीने, 'उच्चता' (अला) के आरम्भ के साथ ही हमारे उपवास का समय आरम्भ हो जाता है।

''अय्याम–ए–हा'' के विशेष दिनों के अवसर पर आप सभी मित्रों को हार्दिक शुभकामनायें।

2 मार्च से 20 मार्च तक उपवास के विधान का अनुपालन करें

सभी बहाईयों के लिये यह परम आवश्यक है कि विधानों के अनुपालन से प्राप्त आशीर्वादों की उनकी जानकारी गहरी हो, जो व्यक्ति और समुदाय के आध्यात्मिक जीवन को उन्नत करती है। इन विधानों में अनिवार्य प्रार्थना और उपवास के विधान हैं जिनकी चर्चा आशीर्वादित सौन्दर्य द्वारा ''मनुष्य के जीवन के दो पंखों'' के रूप में की गई है। प्रस्तुत हैं बहाउल्लाह द्वारा दिये गये कुछ मार्गनिर्देश :

• जिन्होंने सर्वशक्तिशाली, संरक्षक, स्वयमाधार ईश्वर में विश्वास किया है उनके लिये अपनी कृपा के एक प्रतीक के रूप में हमने अपने ग्रंथ में सभी चीजों का विधान किया है और अनिवार्य प्रार्थना और उपवास का आदेश दिया है ताकि इसके सहारे सभी सर्वशक्ति–सम्पन्न सर्वप्रिय ईश्वर के निकट आ सकें। इन दो विधानों को हमने लिखा है और प्रत्येक अटल आदेश की व्याख्या की है। हमने मनुष्यों को उन सब से अलग रहने को कहा है जो उन्हें सत्य से दूर ले जाते हैं और उसका पालन करने का आदेश दिया है जो उन्हें सर्वशक्तिशाली, सर्वप्रेमी ईश्वर के करीब लाता है। कहो : ईश्वर के आदेशों का अनुपालन उसके सौन्दर्य के प्रति अपने प्रेम के कारण करो और उनमें से न बनो जो मूर्ख हैं।

• ईश्वर का गुणगान हो, जिसने अपने सेवकों को सचेत करने के उद्देश्य से अनिवार्य प्रार्थना के विधान को प्रकट किया है और उन्हें उपवास करने का आदेश दिया है, ताकि जो साधनसम्पन्न हैं वे साधनविहीन लोगों के दुःख–दर्द को समझ सकें।

• जो व्यक्ति न तो अच्छे कर्म करता है और न ही ईश्वर की आराधना करता है, वह उस वृक्ष के समान है जिसमें फल नहीं लगते। उसके कर्मों के भी कोई फल नहीं निकलते। जिस किसी ने भी ईश्वर की आराधना के परमानन्द की अनुभूति कर ली है वह सद्कर्म अथवा ईश्वर के गुणगान के बदले उन सभी चीजों को अस्वीकार कर देगा जो इस दुनिया में हैं। उपवास और अनिवार्य प्रार्थना मानव–जीवन के दो पंखों के समान हैं। वह व्यक्ति धन्य है जो समस्त साम्राज्यों के स्वामी, ईश्वर के प्रेम के आसमान में इन पंखों के सहारे उड़ान भरता है।

• अनिवार्य प्रार्थना और उपवास के प्रति लापरवाह मत बनो। जो इनके अनुपालन से वंचित रह जाता है वह ईश्वर को न कभी स्वीकार्य हुआ है, न कभी होगा। तुम सभी परिस्थितियों में विवेक से काम लो। ईश्वर ने, सत्य ही, सब को उसका अनुपालन करने का आदेश दिया है, जो सदा से उनके लाभ के लिये रहा है और रहेगा। सत्य ही, वह सर्वपरिपूरक है, है सर्वोच्च।

• हम ईश्वर से याचना करते हैं कि वे अपने लोगों को सर्वमहान् एवं सर्वोत्तम उपवास धारण करने में सहायता दें, जो किसी व्यक्ति को वह सब देखने से अलग रखता है जो उसके लिये वर्जित है और खान–पान से तथा उन सब से अपने आप को दूर रखता है जो ईश्वर का नहीं है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह अपने प्रियजनों को उसे पूरा करने में समर्थ बनायें जिसका आदेश इस युग में दिया गया है।

• उसका गुणगान हो, जिसने अपनी इच्छा से विधानों को प्रकट किया है। सच, वह जो कुछ भी चाहता है उसके लिये वह सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न है। हे मेरे मित्रों ! जैसा परम पावन ग्रंथ में आदेश दिया गया है वैसा ही करो। 'अला' (उच्चता) के माह में तुम्हारे लिये उपवास का विधान किया गया है। सर्वशक्तिशाली, सर्वोच्च अपने स्वामी के लिये तुम उपवास करो। सूर्योदय से सूर्यास्त तक अपने को संयम में रखो। इस प्रकार तुम्हें मनुष्य का परमप्रिय वह निर्देश देता है जो आदेश सर्वशक्तिशाली, अप्रति–बंधित ईश्वर द्वारा दिया गया है। जो सीमायें तय की गई हैं उन्हें लांघने का अधिकार किसी को भी नहीं दिया गया है और न ही किसी को अपनी इच्छा और कोरी कल्पना के अनुसार इसके अनुपालन की छूट है। उसका भला हो जो मेरे आदेशों का अनुपालन मेरे सौन्दर्य के प्रति अपने प्रेम के कारण करता है और उसका दुर्भाग्य होगा जो सर्वशक्तिशाली, सर्वव्यापी स्वामी के दिवसों में आदेशों में सर्वोपरि आदेश की अवहेलना करता है।

• हालाँकि ऊपर से उपवास कठिन और श्रमसाध्य लगता है, फिर भी आंतरिक रूप से यह कृपा और शांति प्रदान करने वाला है। शुद्धिकरण और सीख ऐसे ही कठिन अभ्यासों पर निर्भर है जो ईश्वर के परम पावन ग्रंथ के अनुरूप हैं और जिन्हें दिव्य विधान की स्वीकृति प्राप्त है, न कि उन पर जो भ्रमित लोगों द्वारा लोगों पर लादे जाते हैं। जो कुछ भी ईश्वर ने प्रकट किया है वह आत्मा को प्रिय है। हम उससे प्रार्थना करते हैं कि वह कृपापूर्वक हमें वह करने में सहायता प्रदान करे जो उसे प्रिय और स्वीकार्य हो।

अब्दुल–बहा के लेखों से

• आराधना के क्षेत्र में ईश्वर के पावन विधानों के दो सर्वशक्तिशाली स्तम्भ हैं–उपवास और अनिवार्य प्रार्थना। इनकी अवहेलना की अनुमति नहीं है और इनके अनुपालन में किसी प्रकार की कोताही स्वीकार्य नहीं है। तीर्थयात्रा की पाती में बहाउल्लाह कहते हैं कि : *''मैं परमेश्वर से याचना करता हूँ, तेरे और उन सब के नाम पर जिनके मुखड़े तेरे मुखमंडल के प्रकाश से प्रकाशित हुये हैं और जिन्होंने तेरे प्रेम के वशीभूत होकर तेरी सभी आज्ञाओं का अनुपालन किया है कि तू अपने और अपने प्राणियों के बीच का पर्दा हटा दे और मुझे इहलोक और परलोक के शुभ–मंगल का दान दे।''* वह घोषणा करते हैं कि ईश्वर के आदेशों का अनुपालन, उस सर्वोत्तमप्रिय के सौन्दर्य के प्रेम से किया जाता है। जब जिज्ञासु ईश्वर के प्रेम में सराबोर हो जाता है तब उसकी यह प्रगाढ़ इच्छा होती है और तब ही वह ईश्वर के विधानों के अनुपालन के लिये तत्पर होता है। अतः, यह असम्भव है कि कोई हृदय जो ईश्वर के प्रेम की सुरभि से सुवासित हो चुका है, उसकी आराधना करने में असफल हो जाये, सिवाय वैसी परिस्थिति के कि इस प्रकार का उसका कर्म शत्रुओं के क्रोध का कारण बन जाये और कलह तथा कुटिलता को जन्म दे दे। अन्यथा, आभा सौन्दर्य का प्रेमी निश्चित रूप से निरन्तर पूरी लगन के साथ अपने स्वामी की आराधना करेगा।

• हे ईश्वर, मेरे ईश्वर ! तेरा यशगान हो ! ये वे दिन है जब तूने अपने चुने हुये लोगों को, अपने प्रियजनों को और अपने सेवकों को उपवास धारण करने का आदेश दिया है। इस उपवास को अपने साम्राज्य के लोगों के लिये तूने एक पथदर्शी प्रकाश बनाया है और यहाँ तक कि अनिवार्य प्रार्थना को तूने उन तक पहुँचने की एक सीढ़ी बनाई है जो तेरी एकता को स्वीकारते हैं। जिन दो शक्तिशाली स्तम्भों के सहारे तूने समस्त मानवजाति की महिमा और सम्मान का आदेश दिया है उनके सहारे मैं तुझसे याचना करता हूँ, हे मेरे ईश्वर, कि तू अपने धर्म को सभी वैसे लोगों से सुरक्षित रख जो अधर्मी और दुष्कर्मी हैं। हे स्वामी, उस प्रकाश को लुप्त न कर जो तूने अपनी सर्वव्यापी शक्ति के सहारे प्रकट किया है। उनकी सहायता कर, जिन्होंने सत्य ही तुझमें विश्वास किया है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, सर्वशक्तिशाली, सर्वसमर्थ।

बहाउल्लाह द्वारा प्रकट की गई उपवास समाप्त करने के पूर्व की जाने वाली प्रार्थना

गुणगान हो तेरा, हे स्वामी, मेरे ईश्वर ! तेरे आदेश के अनुकूल हमने उपवास धारण किया है और तेरे प्रेम के सहारे और तेरी इच्छा के अनुरूप अब इसे समाप्त करता हूँ। हे मेरे ईश्वर, तेरे धर्म के प्रति उन्मुख, तेरे अतिरिक्त अन्य सब से मुक्त रहकर पूरी तरह से तेरे सौन्दर्य के लिये जो भी कर्म हमने किये हैं उन्हें स्वीकार करने की कृपा प्रदान कर। इस सर्वमहिमाशाली युग में हमें, हमारे पूर्वजों को और उन सभी प्राणियों को क्षमादान दे जिन्होंने तुझमें और तेरे समर्थ संकेतों में विश्वास किया है। जो भी तू चुनता है उसे करने में तू समर्थ है। सच, तू सर्वोपरि, सर्वशक्तिशाली, अप्रतिबंधित है।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204 | Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
New Delhi P.S.O. | Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2018-19-20

कोष सम्वर्धन प्रभाग से

केवल आपको ही नई विश्व सभ्यता के निर्माण में आर्थिक योगदान देने का सौभाग्य प्राप्त है, यह कभी नहीं भूलें !

'बहाई कोष' नामक पावन संस्था

''...राष्ट्रीय कोष नाम की संस्था वह आधारशिला है जिस पर अन्य सभी संस्थायें आवश्यक तौर पर आधारित और स्थापित की जानी चाहिये...''

''हमने उनसे निवेदन किया है कि राष्ट्रीय कोष और राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा जैसी अत्यन्त आवश्यक और महत्वपूर्ण संस्थाओं को वे लगातार और पूरे दिल से समर्थन दें। उन सबके समक्ष यह अवश्य ही स्पष्ट किया जाना चाहिये कि इन युगल संस्थाओं को लगातार समर्थन दिया जाना भविष्य की सभी उपलब्धियों की नींव का पत्थर है और वह प्रमुख निर्झरनी है जिससे भविष्य में सभी आशीष प्रस्फुटित होंगे। अपने इन साहसिक प्रयासों में लगे रहें और याद रखें कि भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल और गौरवशाली है।''

–शोगी एफेंदी

भारतीय बहाई समुदाय ने समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने के अपने लक्ष्य को पाने के प्रति समर्पित प्रयास किये हैं और इस दिशा में उठाये गये हर कदम में अपनी प्रतिभागिता दर्ज़ की है। हम पूरे आत्मविश्वास के साथ इस दिशा में बढ़ भी रहे हैं। हमारा ध्यान प्रशिक्षण संस्थान की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना और 'ए' श्रेणी के समुदायसमूहों की संख्या बढ़ाने पर केन्द्रित हुआ है। अनेक समुदायसमूहों में हमने सघन विकास के कार्यक्रम भी शुरू किये हैं।

''बहाउल्लाह के प्रत्येक सजग और समर्पित सेवक का, जो चाहता है कि प्रभुधर्म की प्रगति हो, यह पावन दायित्व है कि वह बहाई कोष को समृद्ध बनाने की दिशा में मुक्तहस्त से और उदारतापूर्वक दान दे।''

बहाई कोष से सम्बन्धित सत्य कथा

अनेक सालों से एमिली इंग्लैंड में स्कूल टीचर थी, लेकिन अपनी अस्वस्थता के कारण समय से पहले उसे अपने काम से अवकाश लेना पड़ा। उन दिनों शिक्षकों को बहुत कम वेतन मिला करता था और चूँकि एमिली को समय से पहले अवकाश लेना पड़ा था, इसलिये उसे अपनी पूरी पेंशन भी नहीं मिलती थी। वह एक छोटे से कमरे में रहती थी और अपनी जरूरतों को मुश्किल से पूरा कर पाती थी, लेकिन वह राष्ट्रीय कोष में नियमित रूप से दान दिया करती थी। इस दान को देने के लिये एमिली सप्ताह में एक दिन खाना नहीं खाती थी।

निवेदन

मित्रों, अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय–समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें अपने बहाई समाचारपत्र/बहाई न्यूज में प्रकाशित कर सकें। ***धन्यवाद !***

मध्यप्रदेश में वार्षिक बजट एवं योजना बैठक सम्पन्न

मध्यप्रदेश राज्य के इन्दौर क्लस्टर में 19 से 22 जनवरी 2018 को बहाई भवन इन्दौर में चार दिवसीय वार्षिक योजना एवं बजट की बैठक सलाहकार महोदय श्री ओमिद सिओशानसिआन के



मध्यप्रदेश में आयोजित बजट एवं योजना की बैठक के प्रतिभागी

मार्गदर्शन में सम्पन्न हुई, जिसमें राज्य बहाई परिषद के सदस्य, प्रशिक्षण संस्थान मण्डल के सदस्य, सहायक मण्डल सदस्यगण, संस्थान संयोजक गण एवं प्रदेश के 6 समुदाय समूहों से कुल 40 मित्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान प्रदेश के 23 क्लस्टरों की योजना बनायी गई, जिसमें प्रदेश के 13 लक्षित क्लस्टरों को अक्टूबर 2018 तक विकास के पहले मील के पत्थर से दूसरे मील के पत्थर तक ले जाने की योजना है।

बैठक के दौरान मित्रों ने 15 समूह बनाकर दो दिन इन्दौर समुदाय के तीन क्षेत्र–स्कीम नं. 113, बापूगांधी नगर और निपानिया एवं उज्जैन समुदाय के हरसोदन में भ्रमण कर प्रभुधर्म का प्रत्यक्ष शिक्षण 56 परिवारों में किया गया, जिसमें से 34 परिवारों में भक्तिपरक बैठकों की शुरूआत हुई एवं अधिकतर परिवारों ने प्रभुधर्म में अपनी आस्था व्यक्त की। इन दो दिनों में कुल 45 मित्रों ने प्रभुधर्म को स्वीकार किया।

बिहारशरीफ में समीक्षा बैठक का आयोजन

पृष्ठ 1 का शेष

से संदर्भित परिपत्र के अध्ययन के क्रम में मित्रों ने परामर्श किया कि निकट भविष्य में बनने वाले बहाई उपासना मन्दिर में अवश्य ही स्थानीय कला एवं संस्कृति का पुट देखने को मिले ताकि उपासना मन्दिर को लेकर स्थानीय लोगों के मन–हृदय में स्वात्म व स्वामित्व का बोध हो सके एवं सेवा व उपासना को दो अनिवार्य एवं अविभाज्य पक्ष मानकर उसे आत्मसात कर सकें।

ध्यातव्य हो कि परिपत्र अध्ययन के उपरांत उपस्थित लोगों से चार्ट पेपर पर उपासना मंदिर का स्वरूप, डिजाइन बनाने तथा उससे संबंधित अपने विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने हेतु संस्थागत पहल की गई जिसके परिणाम–स्वरूप कुछ मित्रों ने स्थानीय कला एवं संस्कृति व अपनी भावनाओं के अनुरूप मंदिर/भवन के स्वरूप को चित्र बनाकर मूर्त्त रूप प्रदान किया तो कुछ मित्रों ने लिखित रूप में अपने सुझाव प्रस्तुत किये।

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2018-19-20
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.2. 2018
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)